राजस्थानी कहानी की विकास यात्रा

-डॉ. कृष्णकुमार 'आशु'
'शब्दांश',
बालाजी की बगीची,
वार्ड नंबर दस, पुरानी आबादी,
श्रीगंगानगर-335001

मनुष्य का धरती पर आना और उसके संकेत, उसकी गतिविधियां और उसके कार्य एक कहानी रचते हैं। प्रत्येक मनुष्य का जीवन ही एक कहानी है। कोई बहुत मुश्किलों से भरी हुई तो कोई बहुत नियामतों से सजी हुई। कोई बहुत मीठी तो बहुत-सी कड़वी...बहुत ही कड़वी! मनुष्य के जीवन के साथ ही उसकी कहानी शुरू हो जाती है। जीवन तो एक दिन खत्म हो जाता है परंतु जीवन खत्म होने के बाद भी उसकी कहानी खत्म नहीं होती। क्योंकि कहानी अमर है, मनुष्य अमर नहीं है। यह बात जुदा है कि किसी की कहानी लोकप्रिय हो जाती है तो किसी की कहानी पर वक्त की धूल पड़ी रह जाती है। पर इससे आप उस मनुष्य की कहानी को 'कहानी' मानने से इनकार नहीं कर सकते। हां, कागज पर और अब तो आभासी दुनिया में इंटरनेट पर कहानी आने की जो बात है तो वह बात अपनी जगह हो सकती है। पर बिना कागज या इंटरनेट पर आई बात भी 'बात' तो रहेगी ही। या नहीं!

दुनिया की सभी भाषाओं में कहानी कही जाती है। रची जाती है। कहानी ने अपनी यात्रा के साथ बहुत उतार-चढ़ाव देखे हैं। बदलते वक्त के साथ कहानी का 'कहन' भी बदलता रहता है। राजस्थानी कहानी भी इससे बच नहीं सकी। हम बात करें तो पता चलता है कि चौदहवीं शताब्दी से राजस्थानी गद्य साहित्य सामने आता है। उस वक्त राजस्थानी कहानी को 'बात' शैली में कहा जाता था। चौदहवीं सदी के अंतिम समय में सामने आई 'धनपाल कथा' के बाद पंद्रहवीं सदी में 'वाग विलास' एवं 'अचलदास खीची री वचनिका' जैसे ग्रंथ बताते हैं कि बात परम्परा राजस्थानी में कितनी प्राचीन है। इसी का विकास करती विधा के रूप में हमें मिलती है-'ख्यात'। यह लंबी कहानी का प्राचीन रूप था। वर्ष 1984 में साहित्य अकादेमी से रावत सारस्वत एवं प्रेम जी प्रेम के सम्पादन में छपा कथा संकलन 'आज री राजस्थानी कहाणियां' की भूमिका लिखते समय रावत सारस्वत लिखते हैं, ''ख्यात अेक सिलसिलेवार लाम्बी बात है, जिण में कोई राज, वंश या जगां बसत कै आदमी री पूणी जाणकारी रैवै। इण अरथ में 'ख्यात' आज री भासा में 'इतिहास' है। 'ख्यात' री बरोबरी में 'बात' अेक खास घटना या प्रसंग री रचना है।''1

इसके बाद आधुनिक काल की बात करें तो हिंदी कहानी के विकास से भी पहले राजस्थानी कहानी सामने आने की बात कही जाती है। वर्ष 1903 में शिवचंद्र भरतिया की रचना 'कनक सुंदर' आई, जिसे उन्होंने 'नवल कथा' नाम दिया था। यह एक उपन्यास बताया जाता है जो कथा साहित्य का ही एक अंग है। यह जुदा बात है कि लोग इसे उपन्यास मानने से ही इनकार करते हैं। इसके बाद आई शिवचंद्र भरतिया की रचना 'विश्रान्त प्रवासी'। यह भी उपन्यास था। परंतु इसके कुछ अंश कहानी रूप में भी प्रचलित हुए और कुछ लोग तो इसे राजस्थानी की पहली कहानी भी कहते हैं। भले ही 'कनक सुंदर' के उपन्यास होने, न होने की

बात पर विवाद हो, 'विश्रान्त प्रवासी' पर भी मतभेद हों परंतु शिवचंद्र भतिया के बारे में नंद भारद्वाज लिखते हैं, ''जिको इतिहासू काम हिंदी में भारतेन्दु हरिश्चंद्र कर्यो, तकरीबन बा ई भूमिका राजस्थानी में शिवचंद्र जी भरतिया री मानीजै। पण आ बात म्हैं वां री भारतेन्दु सूं तुलना सारू नीं लिखर्यो हूं। नवजागरण री चेतना, समाज-सुधार री लूंठी हिमायत, आधुनिक भावबोध अर नुंवै रचना-सिल्प री दीठ संू 'कनक-सुंदर' आधुनिक राजस्थानी री पैली कथा-रचना मानीजै। 2 आधुनिक राजस्थानी कहानी की यात्रा कहते हुए लोगों ने इसकी दशा पर बहुत चिंता प्रकट की है। वर्ष 1976 में रावत सारस्वत एवं रामेश्वर श्रीमाली के सम्पादन में साहित्य अकादेमी से आए संकलन 'आज रा कहाणीकार' में रावत सारस्वत लिखते हैं-''गुन्नीसवैं सइकै रै खतम होतां-होतां अंग्रेजी अर हिंदी रै प्रवेस रै साथै राजस्थानी री साहित्यिक रचनावां हींण औस्था में पूगण लागगी ही। पाछला डेढ सौ बरसां री आ ही दसा राजस्थानी रै भासा रूप नै खतम करण रो काम करयो। ओ ई कारण है कै आज री राजस्थान कहाणी नै दूजी विधावां रै साहित्य रै ज्यूं आपरी जूनी लीक सूंू छेड़ै नूंवो मारग मांडणो पड़्यो। ओ मारग राजस्थान री धरती री पिछांण राखणिया पगां सूं नीं मांडीज्यो, पण ओपरा पगां री ओपरी चालां सूं बण्यो।'' 3 इसके बाद मुरलीधर व्यास का राजस्थानी कहानी के विकास में अनूठा योगदान रहा है। वर्ष 1956 में उनकी कहानी पुस्तक 'बरसगांठ' आई। इस पुस्तक से आधुनिक राजस्थानी को नई दिशा मिलने की बात कही जाती है। उस समय के राजस्थानी के विद्वान नरोत्तमदास स्वामी पुस्तक की प्रस्तावना में लिखते हैं-

आधुनिक राजस्थानी बातां रा प्रथम महत्वपूर्ण लेखक श्री मुरलीधर व्यास है। आज सूं बीस बरस पैलां आप राजस्थानी में नवी शैली री बातां लिखणी सरु करी ही अर आज तांई तीस-चाळीस बातां लिख चूका है। समाज री विकृतियां री ओर सूं आंखियां नीं मींच नै उणां री ओर पाठकां रो ध्यान खींचण वास्तै वै बराबर तत्पर हर्या, जिण सूं समाज मांय भेळी हुयोड़ी गंदगी आघी हुवण में मदद मिलै।4 इन्हीं दिनों में नानूराम संस्कृता की कहानी 'ग्योही' भी खासी चर्चा में रही और अपने नए शिल्प के दम पर यह कहानी बहुत सराही गई।

'राजस्थानी की प्रतिनिधि कहानियां' संकलन का संपादन करते हुए लोकप्रिय कथाकार यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' भी मानते हैं कि आधुनिक राजस्थानी कहानी का असली विकास तो आजादी के बाद ही हुआ है। वे अपनी बात में लिखते हैं, ''वास्तव में देखा जाए तो राजस्थानी कहानी ने नए तेवर के साथ अपना विकास स्वतंत्रता के पश्चात ही किया। प्रारंभ में उसमें पारंपरिक आदर्शवाद का गहरा सम्मिश्रण था जो लोक साहित्य से काफी प्रभावित था, लेकिन उन कथाओं में जीवन और मनुष्य की उपस्थिति दर्ज होने लगी। शिल्प, शैली और भाषा में कसाव आने लगा था, पर उसमें गहरी पैठ और सूक्ष्मता का अभाव था।'' इन विद्वानों के मत को देखते हैं तो साफ नजर आता है कि राजस्थानी कहानी की मुश्किलें न तो उस समय कम थी और न ही आज कम हुई हैं। अलग भाषा एवं मुहावरे को लेकर अपनी-अपनी जिद पर काम करने वाले लोग तब भी थे और आज भी हैं। इस जिद से राजस्थानी कहानी का या कहना चाहिए राजस्थानी साहित्य का कितना भला हुआ, यह हम भलीभांति जानते हैं।

इसके बाद राजस्थानी की कहानी में सांवर दइया का युग आता है। सांवर दइया राजस्थानी कहानी के ऐसे कथाकार माने जाते हैं, जो राजस्थानी कहानी को शिल्प, शैली एवं भाषा की दृष्टि से बहुत ऊंचाई पर ले जाते हैं। सांवर दइया के जीवन काल में उनके चार कहानी संग्रह सामने आए। इनमें 'असवाड़ै-पसवाड़ै', 'धरती कद तांई घूमैली', 'अेक दुनिया म्हारी' अर 'एक ही जिल्द में' शामिल थे। उनके स्वर्गवास के बाद दो कहानी संग्रह और नजर आते हैं-'पोथी जिसी पोथी' अर 'छोटा छोटा सुख दुख'। सांवर दइया की कहानियों को पढ़ते हुए हमें लगता है कि आधुनिक कहानी का जो रूप सम्पूर्ण दुनिया में व्याप्त है, जिस रूप ने पूरी दुनिया और

प्रत्येक भाषा के पाठक अपनी दृष्टि एवं हृदय में बसाना चाहते हैं, राजस्थानी में ठीक वही भाषा एवं शिल्प सांवर दइया की कहानियों में मिलते हैं। सच बात तो यह है कि राजस्थानी कहानी को बात, ख्यात एवं लोककथाओं के घेरे से बाहर निकालकर दुनिया के सामने, विश्व की किसी भी दूसरी भाषा की कहानी के मुकाबले में खड़ी करने का श्रेय सांवर दइया को ही जाना चाहिए। उनकी कहानियां नए प्रतीकों की रचना करती हैं। नए बिंब रचती हैं और पाठक हैरान ही रह जाता है कि आम आदमी की पीड़ा को, गांव-गुवाड़ की बातों को और जीवन की मुश्किलों में उलझे आदमी की कठिनाइयों को इस रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है। इसमें कोई शक नहीं कि राजस्थानी कहानी के विकास में शिवचंद्र भरतिया से शुरू करें और मुरधीधर व्यास, नृसिंह राजपुरोहित, नानूराम संस्कृता, राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, विजयदान देथा, श्रीलाल नथमल जोशी, अन्नाराम सुदामा, यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र', रामेश्वरदयाल श्रीमाळी, बैजनाथ पंवार, नेमनारायण जोशी, मूलचंद प्राणेश, करणीदान बारहठ, सांवर दइया एवं बहुत सारे और भी नाम हैं, जिनका बहुत योगदान रहा है। इनके बाद हम समकालीन राजस्थानी कहानी की बात करें तो हमारे सामने बीएल माली 'अशांत', नंद भारद्वाज, श्याम जांगिड़, रामस्वरूप किसान, मंगत बादल, मालचंद तिवाड़ी, चेतन स्वामी, ओमप्रकाश भाटिया, माधव नागदा, मीठेस निरमोही, कमला कमलेश, मनोहरसिंह राठौड़, मदन केवलिया, विनोद सोमानी 'हंस', भंवरलाल 'भ्रमर', भरत ओळा, बुलाकी शर्मा, मधु आचार्य 'आशावादी', प्रमोद शर्मा, हरमन चौहान, सत्यनारायण सोनी, अरविंदसिंह आशिया, दुलाराम सहारण सरीखे बहुत सारे नाम हैं, जिन्होंने अपनी आकर्षक कहानियों से राजस्थानी कहानी को नए आयाम दिए। अपने कहन, शिल्प, शैली एवं भाषा से नए मुहावरे गढ़ते हुए राजस्थानी कहानी की आकर्षक पहचान दुनिया की सभी भाषाओं की कहानियों में बनाने में यशस्वी कार्य किया है। इतने चमकते इतिहास के बाद आज हम दृष्टिपात करते हैं तो अब राजस्थानी कहानी का उत्तर आधुनिक काल चलता मिलता है। इस उत्तर आधुनिक काल में राजस्थानी कहानी के नए कथाकार हमारे सामने आ रहे हैं। इनकी कहानियों के मुद्दे एकदम नए एवं निराले हैं। आज के वक्त को टटोलती इनकी कहानियां हमारे सामने एक आकाश खोल देती हैं। जब हम इस आकाश की सैर करने जाते हैं तो पता चलता है कि दुनिया कहां से कहां पहुंच गई है। यह दुनिया तो हमारी दुनिया से एकदम ही अलग और निराली है। इस दुनिया में नैतिकता, निष्ठा एवं ईमानदारी का कोई चिह्न ही नहीं। यहां तो प्रत्येक मनुष्य का एक ही मकसद है, जैसे भी हो, अपना उल्लू सीधा करो! इस आकाश में दुनिया का सारा झूठ-सच, अच्छा-बुरा, भोला-चालाक, स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े, रोजगार-पढ़ाई, व्यापार-मजदूरी, नेता-अधिकारी, गांव-शहर, खेत-खलिहान, किसान-महाजन सब कुछ एक नए रूप में सामने नजर आता है। रूप भी एकदम नंगे सच जैसा! सम्पूर्ण दुनिया को एक गांव में बदलने वाले इस वैश्वीकरण के दौर में आज उत्तर आधुनिक काल का कहानीकार किसी की भी लिहाज नहीं करता। न रिश्तों की, न मर्यादा की, न असूलों की, न सरकार की और न ही कानून की! वह आज के सच को पाठकों के सामने लाकर अलफ नंगा खड़ा कर देता है। इसे देखकर पाठक हैरान तो होता ही है, कुछ वक्त तक सोच में भी पड़ जाता है कि हमारे समाज में आज क्या हो रहा है।

आज समलैंगिकता, किन्नर, पुरुष वेश्या, स्त्री की महत्वाकांक्षा, दलितों पर अत्याचार, कोख में कन्या की हत्या, धर्मयुद्ध के नाम पर मानवता का कत्ल करने की प्रवृति के साथ और भी बहुत सारे मुद्दे एवं विमर्श हमारे सामने आ रहे हैं, जिन पर उत्तर आधुनिक काल के इन राजस्थानी कहानीकारों ने अपनी कलम चलाई है। नेताओं, अधिकारियों, समाजसेवियों एवं दूसरे सफेदपोश वर्गों का नंगा सच पाठकों की अदालत में रखने का यशस्वी कार्य इन नए कहानीकारों ने बहुत

मेहनत से किया है। इनमें हरीश बी. शर्मा, सतीश छीम्पा, राजू सारसर राज, उम्मेद धानिया, कुमार श्याम, शिव बोधि का नाम लिया जा सकता है। निश्चय ही कई और नाम होंगे। परंतु अपने ज्ञान एवं पहुंच की सीमा होने के कारण वहां तक मैं पहुंच नहीं सका।

राजस्थानी में आज महिलाएं भी बहुत कहानियां लिखती हैं। बहुत बड़े-बड़े पुरस्कार-सम्मान भी प्राप्त कर रही हैं। पहले भी मिले हैं, अब भी मिल रहे हैं और आगे भी मिलते रहेंगे। परंतु एक कड़वी बात यह भी है कि राजस्थानी में तीन दहाई से ज्यादा महिला कथाकारों की कहानियां पढ़ते हुए मुझे कई बार लगता है कि हमारी राजस्थानी में कहानियां रचने वाली बहुत-सी महिलाओं को वक्त की नब्ज को पकडक़र चलने की जरूरत है। अभी उन्हें बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। ऐसा नहीं है कि राजस्थानी में अच्छी कहानियां लिखने वाली महिला कथाकार हैं ही नहीं, परंतु जब आधुनकि राजस्थानी या उत्तर राजस्थानी कहानी की बात करते हैं तो अंगुलियों पर गिनी जाने योग्य महिलाएं ही हमारे सामने आती हैं। इन सारी स्थितियों के बाद भी समय के साथ चल रही राजस्थानी कहानी प्रगति के पथ पर है और निरंतर अपना होना सिद्ध कर रही है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि आधुनिक राजस्थानी कहानी का भविष्य उज्ज्वल है और यह विश्व कहानी के समक्ष अपनी मौजूदगी दर्ज करवाने की क्षमता भी रखती है।

संदर्भ:

1. आज री राजस्थानी कहाणियां, सम्पादक रावत सारस्वत एवं प्रेम जी प्रेम, प्रकाशक-साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, संस्करण 1984, पृष्ठ-8
2. तीन बीसी पार, सम्पादक-नंद भारद्वाज, प्रकाशक-नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, संस्करण-2015, पृष्ठ-11-12
3. आज रा कहानीकार, सम्पादक -रावत सारस्वत एवं रामेश्वर श्रीमाली, प्रकाशक- साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, संस्करण- 1976
4. तीन बीसी पार, सम्पादक-नंद भारद्वाज, प्रकाशक-नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, संस्करण-2015, पृष्ठ-13
5. राजस्थानी की प्रतिनिधि कहानिया, सम्पादक-यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' व बुलाकी शर्मा, प्रकाशक-विद्या पुस्तक सदन, नई दिल्ली, संस्करण-2002, पृष्ठ- 6